फर्निचर

फर्निचर शब्द सुनते ही हम घर में प्रयोग आने वाली सभी चीजें जैसे कुर्सी, टेबल, बेड, डाइनिंग टेबल, ड्रेगि टेबल, बुफसेल्फ, आलमारी, कपवर्ड इत्यादि अनेक चीजों पर हमारा ध्यान चला जाता है। फर्निचर का उपयोग हम सिर्फ घर में ही नहीं करते हैं, फर्निचर का उपयोग स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल, रेलवे स्टेशन, दुकान, रेस्टोटेड अर्थात् कहीं भी चले जायें फर्निचर के बिना उस जगह की कोई अस्तित्व नहीं है।

तीस हजार साल पहले मनुष्य फर्निचर का प्रयोग पत्थरों तथा जानवरों की हड्डियों से किया करते थे।

गृह सज्जा में सबसे महत्वपूर्ण स्थान फर्निचर का है चाहे हमारी आर्थिक स्थिति या मकान का आकार जैसा भी हो फर्निचर के बिना हम घर की कल्पना भी नहीं कर कते हैं। प्रतिदिन के व्यवहार में उठने बैठने, अध्ययन करने में, वस्तुओं को एकत्र करने में अथवा सजावट के लिए ही फर्निचर के बिना घर की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। फर्निचर हमारे स्वस्थ जीवन के लिए भी नितांत आवश्यक है जिन फर्निचर से हमें सुविधा या आराम नहीं मिलता है वैसे फर्निचर का उपयोग कदापि नहीं करना चाहिए।

फर्निचर के प्रकार

फर्निचर अनेक प्रकार के होते हैं :–

(1) लकड़ी के फर्निचर :– प्रायः मेज, कुर्सी आलमारी, पलंग, चौकी इत्यादि लकड़ी के ही बने होते हैं ये लकड़ी देवदार, गवान, शीशम, आम, सुखुआ आदि के लकड़ी के प्रयोग होते हैं। आज कल फर्निचर बनाने में प्लाई का उपयोग किया जाने लगा है इससे बना फर्निचर काफी हल्का होता है परन्तु ये पानी धूप इत्यादि से खराब हो जाते हैं।

(2) बेंत के फर्निचर :— बेंत से कुर्सी मेज, सोफा, मोढ़ा इत्यादि फर्निचर ही बनता है बेंत के फर्निचर का प्रयोग ह बगीचा, बरामदा या आँगन के लिए ही कर सकते हैं। बेंत के फर्निचर काफी हल्के होते हैं इनको एक जगह से दूसरी जगह आसानी से किया जा सकता है। परन्तु बेंत के फर्निचर नाजुक हो हैं काफी लम्बे समय तक इनका प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

(3) लोहे का फर्निचर :— लोहे का फर्निचर लोहे की खोखली पाईप या हल्के सीट से बनाई जाती है। लोहे से बने फर्निचर काफी मजबुत होते हैं इन्हें हल्का भी बनाया जा सकता है। लोहे के आलमारी में सामान सुरक्षित रहते हैं इसमें कीडे मकड़ों तथा सीलन का डर नहीं रहता है।

(4) प्लास्कि के फर्निचर :— आज कल प्लास्टिक के फर्निचर जैसे कुर्सी, टेबल, डायनिंग टेबल, आलारी का काफी प्रचलन सुंदर, हल्के, मजबुत होते हैं इनकी सफाई करना भी बहुत आसान है तथा इसे एक जगह से दूसरी जगह आसानी से ले जाया जा सकता है।

(5) गद्देदार फर्निचर :— इस प्रकार के फर्निचर में नारियल के रेशा छिल्के, रूई, रबर, फोम आदि भरकर स्प्रिंग का प्रयोग किया जाता है इसके ऊपर से कपड़े, चमड़े, प्लास्टिक या रक्सीन से ढ़क कर सुन्दर बा दिया जाता है इसका प्रयोग प्रायः सोफा बनाने के लिए किया जाता है। ऐसा फर्निचर आरामदेह तथा टिकाऊ होता है।

(6) पुराने फर्निचर :— पुराने फर्निचर काफी भारी एवं नक्काशीदार होते हैं इनकी सफाई करना काफी कठिन न है इसमें समय—समय पर सुन्दर दिखने के लिए पालिस करवाना पड़ता है इन्हें एक

स्थान पर रखकर छोड़ दिया जाता है यानि जहाँ बड़ा या स्थायी मकान हो वहीं उनका प्रयोग किया जाता है।

(7) मुड़ने वाले फर्निचर :— जगह के अभाव के कारण प्रायः मुड़ने वाले फर्निचर का प्रयोग किया जाता है ऐसे फर्निचर लोहे के पतले पाईप के फ्रेम के बने होते हैं तथा उन पर प्लास्टिक से बुनाई की जाती है रात में इसे खोलकर सोया जा सकता है और सुबह मोड़ कर रख देने पड़ता है इसी प्रकार के टेबुल कुर्सी का प्रयोग किया जाता है। आज—कल जगह के अभाव के कारण सोफा कम बेड़ दिवार पर लगाने वाले बेड, ड्रावर वाले आधुनिक टेबुल इत्या का प्रचलन काफी बढ़ गया है।

(8) कामचलाऊ फर्निचर :— बजट के अभाव में या जगह के अभाव में प्रायः एक समान के बक्सों या टेबुल के ऊपर दरी या चादर बिछाकर चौकी की तरह उपयोग में लाया जाता है। गाँव में अभी भी लोग खाट का उपयोग करते हैं। हल्के देवदार के बक्से में सामान रखकर ऊपर से लकड़ी का पटरा लगा दिया जाता है या लकड़ी के पटरों को निकाल कर बुक सेल्फ या सामान रखने के लिए रैक बना लिया जाता है।

Madhurima Mishra
Dept. Home Science
Mahila College, Dalmianagar